पाठ – भोर और बरखा

शब्दार्थ –

1. बंसीवारे – बाँसुरी वाले , श्री कृष्ण , कान्हा
2. ललना – लाल , पुत्र
3. रजनी – रात , निशा , रात्रि
4. भोर – सुबह , सूर्योदय के पूर्व की स्थिति , प्रातःकाल , तड़के
5. किंवारे – दरवाजे
6. गोपी – गोपियाँ , सखियाँ
7. मथत – मथना , दूध या दही को मथनी आदि से बिलोना , छानना
8. सुनियत – सुनाई देते हैं
9. कंगना – कंगन
10. झनकारे – झंकार , झन-झन , खनखनाहट
11. लालजी – दुलारे , प्यारे
12. सुर – देव , देवता
13. ठाढ़े – खड़े होना
14. द्वारे – दरवाजे पर
15. ग्वाल-बाल – ग्वालों के बच्चे
16. करत – कर रहे हैं
17. कुलाहल – शोर , धूम , कोहराम
18. सबद – सभी
19. उचारै – उच्चारण करना , शब्द को मुख से बोलना
20. लीनी – लिए हुए
21. गउवन – गाय , गौ
22. रखवारे – रक्षक , रक्षा करने वाले
23. गिरधर – वह जो पहाड़ को धारण करे , पहाड़ उठाने वाले
24. नागर – नगरवासी , नागरिक
25. सरण – गमन , धीरे – धीरे आगे बढ़ना या चलना , रेंगना , खिसकना , सरकना
26. आयाँ – आने वाले
27. तारै – तरण करना , उद्धार करना , कल्याण करना
28. बरसे – बरसना

egyanarchive

29.बदरिया – बादल का टुकड़ा, घटा
30.सावन – वर्ष का एक महीना जो आषाढ़ के बाद और भाद्रपद के पहले आता है , श्रावण मास
31.मन-भावन – मन को भाने वाला , मन को प्रिय या भला लगने वाला , प्रियदर्शी , आत्मीय
32.उमग्यो – उत्साहित होना
33.मेरो – मेरा
34.मनवा – मन
35.भनक – मंद और अस्पष्ट ध्वनि , आभास , उड़ती हुई ख़बर
36.आवन – आना
37.उमड़-घुमड़ – गरजना , जल्दबाज़ी
38.चहुँदिस – चारों दिशाओं
39.दामिन – बिजली , विजेता
40.दमकै – चमकना
41.पवन – हवा
42.सुहावन – दिलकश , उत्तम , सुंदर , हसीन , खूबसूरत
43.आनंद – सुख , हर्ष , प्रसन्नता , अलौकिक ख़ुशी का अनुभव
44.मंगल – कल्याण , भलाई

व्याख्या –

1- **जागो बंसीवारे ललना !**
जागो मोरे प्यारे !
रजनी बीती , भोर भयो है , घर – घर खुले किंवारे।
गोपी दही मथत , सुनियत हैं कंगना के झनकारे ।।
उठो लालजी ! भोर भयो है , सुर – नर ठाढ़े द्वारे।
ग्वाल – बाल सब करत कुलाहल , जय – जय सबद उचारै ।।
माखन – रोटी हाथ मँह लीनी , गउवन के रखवारे।
मीरा के प्रभु गिरधर नागर , सरण आयाँ को तारै ।।

सन्दर्भ – प्रस्तुत कविता हमारी पाठ्य पुस्तक वसंत भाग 2 की कविता "भोर और बरखा" से ली गई है। इस कविता की कवयित्री 'मीरा बाई ' हैं।

प्रसंग – कवियत्री मीरा बाई के इस पद में उन्होंने यशोदा माँ द्वारा कान्हा जी को सुबह जगाने के दृश्य का अत्यधिक मनोरम दृश्य प्रस्तुत किया है।

egyanarchive

गाँव में सुबह जहाँ एक और गोपियाँ अपने कामों में व्यस्त हो गई हैं वहीँ दूसरी और देवता और मनुष्य सभी श्री कृष्ण के उठने और उनके दर्शन के इन्तजार में उनके दरवाजे पर खड़े हैं। कवियत्री मीरा बाई ने इस पद के द्वारा श्री कृष्ण को सभी का उद्धार करने वाला बताया है।

व्याख्या – इस पद में कवियत्री मीरा बाई वर्णन करती हैं कि यशोदा माता कान्हा जी को सुबह उठाते हुए कहती हैं कि बाँसुरी धारण करने वाले मेरे प्यारे पुत्र अर्थात कान्हा अब जाग जाओ। रात अब बीत गयी है और सुबह हो चुकी है। सभी लोगों ने अपने – अपने घरों के दरवाजे खोल दिए हैं। सभी गोपियाँ दही को मथकर मक्खन निकाल रही हैं और दही मथते हुए उनके कंगनों में खनखनाहट हो रही है। यशोदा माता बड़े प्यार से कान्हा जी को उठाते हुए कहती हैं कि सुबह हो गई है और हमारे दरवाज़े पर देवता और सभी मनुष्य तुम्हारे दर्शन करने के लिए इंतज़ार कर रहे हैं। तुम्हारे सभी ग्वाल – मित्र तुम्हारे साथ खेलने के किए शोर मचा रहे हैं और सभी तुम्हारी जय – जयकार कर रहे हैं। वे सब हाथ में मक्खन और रोटी लिए , गौ रक्षक अर्थात तुम्हारा गाय चराने जाने के लिए इंतज़ार कर रहे हैं। कवियत्री मीरा बाई कहती हैं कि उनके प्रभु ने जिस तरह सभी नगरवासियों की रक्षा के लिए पर्वत को धारण किया था उसी तरह जो कोई भी उनकी शरण में जाता है वे सभी का उद्धार करते हैं।

2- **बरसे बदरिया सावन की।**
सावन की , मन – भावन की ।।
सावन में उमग्यो मेरो मनवा , भनक सुनी हरि आवन की।
उमड़ – घुमड़ चहुँदिस से आया , दामिन दमकै झर लावन की ।।
नन्हीं – नन्हीं बूँदन मेहा बरसे , शीतल पवन सुहावन की।
मीरा के प्रभु गिरधर नागर ! आनंद – मंगल गावन की ।।

सन्दर्भ – प्रस्तुत कविता हमारी पाठ्य पुस्तक वसंत भाग 2 की कविता "भोर और बरखा" से ली गई है। इस कविता की कवयित्री 'मीरा बाई ' हैं।

प्रसंग – इस पद में कवियत्री मीरा बाई बरसात का बड़ा ही मनमोहक चित्रण कर रही हैं। बरसात के आगमन से उन्हें उनके प्रभु के आने का आभास होता है। उमड़-घुमड़ कर बादल आसमान में चारों तरफ फैल जाते हैं, आसमान में बिजली भी कड़कती है। बरसात कवियत्री मीरा बाई को ऐसा महसूस करवाती हैं , मानो श्रीकृष्ण ख़ुद चलकर उनके कल्याण के लिए उनके समक्ष सावन के रूप में आ गए हैं।

व्याख्या – अपने दूसरे पद में कवियत्री मीरा बाई सावन का बड़ा ही मनमोहक चित्रण कर रही हैं। कवयित्री मीरा बाई का मन सावन मास में अत्यधिक उत्साहित होता है क्योंकि बरसात के आगमन से उन्हें उनके प्रभु के आने का आभास होता है। उमड़ – घुमड़ कर बादल आसमान में चारों दिशाओं से आ जाते हैं और आसमान में बिजली भी बहुत तेज कड़कती है जैसे वह बारिश की झड़ी लगाने वाली हों। आसमान से बरसात की नन्ही – नन्ही बूँदें गिरती हैं और साथ – ही – साथ

egyanarchive

ठंडी हवाऐं चलने से यह मौसम और भी ज्यादा दिलकश हो जाता है। कवियत्री मीरा बाई कहती हैं कि उनके प्रभु ने जिस तरह सभी नगरवासियों की रक्षा के लिए पर्वत को धारण किया था उसी तरह आभास होता है कि प्रभु अपने भक्तों को अलौकिक ख़ुशी का अनुभव व उनके कल्याण के लिए उनके समक्ष सावन के रूप में आ गए हैं।

प्रश्न-अभ्यास

कविता से

प्रश्न 1. 'बंसीवारे ललना' 'मोरे प्यारे लाल जी' कहते हुए, यशोदा किसे जगाने का प्रयास करती हैं और कौन-कौन-सी बातें कहती हैं?

उत्तर-

वह उनसे कहती हैं कि मेरे लाल जागो, रात बीत गई है, सुबह हो गई है। सबके घरों के दरवाजे खुल गए हैं। गोपियाँ दही बिलो रही हैं। और तुम्हारे खाने के लिए मनभावन मक्खन निकाल रही हैं। तुम्हें जगाने के लिए सभी देव और मानव खड़े हैं जो तुम्हारे दर्शनों की प्रतीक्षा कर रहे हैं। तुम्हारे सखा, ग्वाल-बाल तुम्हारी जय-जयकार कर रहे हैं। अतः तुम अब उठ जाओ।

प्रश्न 2. नीचे दी गई पंक्ति का आशय अपने शब्दों में लिखिए- 'माखन-रोटी हाथ मँह लिनी, गउवन के रखवारे।'

उत्तर-

गायों की रखवाली करने वाले तुम्हारे मित्र ग्वालवालों ने रोटी और मक्खन लिया हुआ है। वे तुम्हारी प्रतीक्षा कर रहे हैं। हे कृष्ण उठो और जाओ।

प्रश्न 3. पढ़े हुए पद के आधार पर ब्रज की भोर का वर्णन कीजिए।

उत्तर

ब्रज में भोर होते ही ग्वालनें घर-घर में दही बिलौने लगती हैं, उनकी चूड़ियों की मधुर झंकार वातावरण में गूंजने लगती है, घर-घर में मंगलाचार होता है, ग्वाल-बाल गौओं को चराने के लिए वन में जाने की तैयारी करते हैं।

प्रश्न 4. मीरा को सावन मनभावन क्यों लगने लगा?

उत्तर-

मीरा को सावन मनभावन इसलिए लगने लगा, क्योंकि सावन की फुहारें में मन में उमंग जगाने लगती हैं तथा श्रीकृष्ण के आने का आभास हो गया।

egyanarchive

प्रश्न 5. पाठ के आधार पर सावन की विशेषताएँ लिखिए।

उत्तर-

1- सावन के आते ही बादल चारों दिशाओं में उमड़-घुमड़कर विचरण करने लगते हैं।

2-बिजली चमकने लगती है, वर्षा की नन्हीं-नन्हीं बूंदे बरसती हैं।

3-शीतल हवाएँ बहने लगती हैं और मौसम सुहावने लगने लगते हैं।

कविता के आगे

प्रश्न 1. मीरा भक्तिकाल की प्रसिद्ध कवयित्री थीं। इस काल के दूसरे कवियों के नामों की सूची बनाइए तथा उसकी एक एक रचना का नाम लिखिए।

उत्तर-

कबीरदास	–	बीजक
सूरदास	–	सूरसागर
तुलसीदास	–	रामचरितमानस
जायसी	–	पद्मावत

प्रश्न 2. सावन वर्षा ऋतु का महीना है, वर्षा ऋतु से संबंधित दो अन्य महीनों के नाम लिखिए।

उत्तर

'सावन' वर्षा ऋतु का विशेष महीना माना जाता है लेकिन सावन से पहले के महीने आषाढ़ वे सावन के बाद के महीने भादों में भी कई बार वर्षा हो जाती है।

egyanarchive

अनुमान और कल्पना

प्रश्न 1. सुबह जगने के समय आपको क्या अच्छा लगता है?

उत्तर

सुबह जगने के समय मुझे अच्छा लगता है कि मेरी माँ मेरे सामने हो।

प्रश्न 2. यदि आपको अपने छोटे भाई-बहन को जगाना पड़े, तो कैसे जगाएँगे?

उत्तर-

यदि हमें छोटे भाई-बहन को जगाना पड़े तो प्यार से उनके सिर और बालों को सहलाते हुए जगाएँगे।

प्रश्न 3. वर्षा में भींगना और खेलनों आपको कैसा लगता है?

उत्तर-

वर्षा में भींगना और खेलना मुझे बहुत अच्छा लगता है।

प्रश्न 4. मीरा बाई ने सुबह का चित्र खींचा है। अपनी कल्पना और अनुमान से लिखिए कि नीचे दिए गए स्थानों की सुबह कैसी होती है

(क) गाँव, गली या मुहल्ले में,

(ख) रेलवे प्लेटफ़ॉर्म पर

(ग) नदी या समुद्र के किनारे

(घ) पहाड़ों पर।

उत्तर-

(क) गाँवों में लोगों की चहल-पहल शुरू हो जाती है। गाँव में गायें रंभाने लगती हैं, पक्षी चहचहाने लगते हैं। कुछ लोग सुबह-सुबह मंदिर जाने लगते हैं, कई सैर पर जाते हैं। किसान हल लेकर खेतों पर जाने को तैयार हो जाते हैं।

(ख) रेलवे प्लेटफार्म पर सुबह-सुबह गाड़ी पकड़ने रेल का इंतजार करते दिखाई देते हैं। रेलवे स्टेशन पर गाड़ियों का आवागमन होने लगता है। सवारियाँ उतरती-चढ़ती रहती हैं, प्लेटफॉर्म पर सफ़ाई कर्मचारी झाड़ लगाते दिखाई देते हैं।

(ग) नदी या समुद्र के किनारे सुबह का वातावरण बिलकुल शांत होता है। उनमें जल धीमी गति से प्रवाहित होता रहता है। कुछ लोग सैर करते हुए दिखाई देते हैं।

(घ) पहाड़ों पर प्रातः लुभावनी लगती है। उगते हुए सूरज की किरणे अत्यंत मनोरम दृश्य उपस्थित करती हैं। मंद-मंद हवाएँ यहाँ चलती रहती हैं।

egyanarchive

भाषा की बात

प्रश्न 1. कृष्ण को 'गउवन के रखवारे' कहा गया जिसका अर्थ है गौओं का पालन करनेवाले। इसके लिए एक शब्द दें

उत्तर-

गोपाला या गोपालक।

प्रश्न 2. नीचे दो पंक्तियाँ दी गई हैं। इनमें से पहली पंक्ति में रेखांकित शब्द दो बार आए हैं, और दूसरी पंक्ति में भी दो बार। इन्हें पुनरुक्ति (पुनः उक्ति) कहते हैं। पहली पंक्ति में रेखांकित शब्द विशेषण हैं और दूसरी पंक्ति में संज्ञा।

'नन्हीं-नन्हीं बूंदन मेहा बरसे' 'घर-घर खुले किंवारे'

• इस प्रकार के दो-दो उदाहरण खोजकर वाक्य में प्रयोग कीजिए और देखिए कि विशेषण तथा संज्ञा की पुनरुक्ति के अर्थ में क्या अंतर है?

जैसे–मीठी-मीठी बातें, फूल-फूल महके।

उत्तर

विशेषण		**पुनरुक्ति**
गरम-गरम	–	माँ ने गरम-गरम पकौड़े बनाए।
तरह-तरह	–	बगीचे में तरह-तरह के फूल खिले थे।
सुंदर-सुंदर	–	रमा ने सुंदर-सुंदर साड़ियों का चुनाव कर लिया।
मीठे-मीठे	–	शबरी ने मीठे-मीठे बेर राम को खिलाए।

संज्ञा		**पुनरुक्ति**
गली-गली	–	नेताओं ने गली-गली में प्रचार शुरू कर दिया।
गाँव-गाँव	–	सरकार ने गाँव-गाँव में कुएँ खुदवाने का प्रस्ताव जारी किया।
बच्चा-बच्चा	–	मुहल्ले का बच्चा-बच्चा यह बात जान गया कि मंदिर में चोरी पुजारी ने की है।
वन-वन	–	राम, लक्ष्मण और सीता वनवास के समय वन-वन भटकते रहे।

कुछ कहने को

प्रश्न 1. कृष्ण को 'गिरधर' क्यों कहा जाता है? इसके पीछे कौन सी कथा है? पता कीजिए और कक्षा में बताइए।

उत्तर

कृष्ण को गिरधर कहा गया है क्योंकि उन्होंने गोवर्धन पर्वत को अपनी उँगली पर उठाया था अर्थात् गिरि को धारण करने वाले।

मूल्यपरक प्रश्न

प्रश्न 1.मीरा और कृष्ण की भक्ति के बारे में पाँच वाक्य लिखिए।

उत्तर-

1- कवयित्री मीरा कृष्ण की परम भक्त थीं।

2- वे कृष्ण को अपना पति मानकर भक्ति करती थीं।

3- उन्होंने कृष्ण प्रेम के लिए घर दूद्वार को छोड़ दिया।

4- वे घूम-घूमकर मंदिरों में कृष्ण भक्ति में लीन रहती थी।

5- वह कृष्ण की अनन्य भक्त थी।

6- इसके लिए उन्होंने संसार की लोक-लाज की भी परवाह नहीं की।

Ogyanarchive